मई 2018 वर्ष : 1 अंक :8

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

हिंदी में प्रकाशित संस्थान की मासिक पत्रिका का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करने में गर्व महसूस हो रहा है। जैसा की विगत पिछले कुछ महीनो से संस्थान की मासिक उपलब्धि और आयोजनों का इस पत्रिका में संक्षित विवरण रहता है, वैसे ही इस बार भी संस्थान की मुख्य उपलब्धि को इस अंक में समाहित किया गया है। यह संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सबसे पुराने संस्थानों में से एक है और अपनी कृषक प्रिय तकनीको की वजह से मात्स्यिकी में अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है। इस पत्रिका के माध्यम से हम वर्तमान की समस्त व्यावहारिक तकनीको या कार्यरत तकनीको की जानकारियाँ अपने कृषक भाईयो और बहनों तक पहुँचाने का प्रयास लगातार करते रहते है। इसी उपलक्ष में भारत सरकार द्वारा आरम्भ की गयी योजनाओ द्वारा हमारे वैज्ञानिक समय समय पर कृषको से संपर्क स्थापित करते रहते है और उनकी समस्यायों के निपटारे के लिए प्रयासरत रहते है। इसी संपर्क कार्यकर्मो द्वारा हम बीहड़ और दूरदराज के मत्स्य किसानो से भी संवाद करते रहते है। हमारे वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मी इन दूरदराज स्थानों में स्थित कृषको की समस्याओ के निपटारे के लिए बैरकपुर एवं अन्य केन्द्रों में अपना शोध कार्य करते है। प्रगतिशील कृषको को प्रोत्साहन हेतु संस्थान के द्वारा उचित सम्मान भी दिया जाता है। हमारा हमेशा यह प्रयास रहता है की मत्स्य कृषक अपनी कोई भी समस्या हमसे बीना किसी संकोच के साँझा कर सके इसलिए संस्थान में एक व्यावहारिक वातावरण की आवश्यकता पर हमेशा जोर दिया जाता है। यह पत्रिका आप सभी के मार्गदर्शन के लिए आपके समक्ष प्रस्तुत है और आशा करते है की आपका मार्गदर्शन हमे हमेशा मिलता रहेगा।

धन्यवाद

मुख्य शोध उपलब्धियां

ताप्ती नदी के सर्वेक्षण में विदेशी प्रजाति, ओरियोक्रोमिस मोसाम्बिकस की उपस्थिति इसके उद्गम स्थल में पाई गई है। वर्तमान में यह प्रजाति इस नदी के सभी भागों में पाई गई है। मानसून पश्चात् किये गये सैम्पलिंग में यह प्रजाति ऊपरी और मध्य भागों में 67 तथा 8 प्रतिशत क्रमशः पाई गई है। जलक्षेत्र में इन प्रजातियों के होने से स्थानीय/देशी प्रजातियों के लिये भोजन, आवास और प्रजनन संबंधी कठिनाइयां आ सकती हैं।

ताप्ती नदी के नेपानगर जलक्षेत्र की पेराम्बेसिस रंगा तथा देदातलाई जलक्षेत्र की स्पेराटा सिंघाला मछलियों में ब्लैकस्पाट तथा डिप्लोस्टोमिआसिस परजीवी संक्रमण देखा गया।

काठजोड़ी नदी के जल प्रवाह के अध्ययन में पाया गया है कि 5 महीनों में इससे होने वाले प्रवाह में लगभग 32 बार कम प्रवाह हुआ है।इस वर्ष मानसून के समय जल प्रवाह 1,60,000 क्युसेक्स हुआ। मत्स्य प्रजातियों में सबसे अधिक गोनिआलो समनामिना और इसके बाद लेबियो रोहिता पाई गई। इस समय मत्स्य प्रजाति विविधता अधिक देखी गई। ग्रीष्म काल में जल प्रवाह घटकर 5000 क्युसेक्स दर्ज किया गया। पुन्टियस प्रजातिया लगभग 60 प्रतिशत तक पाई गई पर मत्स्य प्रजातियों की विविधता भी कम देखी गई।

ईस्ट कोलकाता वेटलैण्ड्स के सिलवर कार्प मछलियों में रोग संक्रमण पाया गया। इसके लिये इन मछलियों में रोगजनक बैक्टीरिया, लेसियोमोनास शिजेलोएड की पहचान कर संक्रमित मछलियों का उपचार किया गया।

दिनांक 12 मई 2018 को गंगा नदी के कन्नौज क्षेत्र में बड़ी संख्या में मछलियां मरी पाई गई। स्थानीय मछुआरों तथा लोगों के साथ बातचीत द्वारा प्राथमिक सर्वेक्षण में यह पाया गया कि 12 मई 2018 को गंगा नदी का जल गहरा पीले/काले रंग जैसा हो गया था तथा इसमें से दुर्गन्ध आ रही थी। गंगा नदी और गारा

नदी के संगम के निचले क्षेत्र से शाहजहांपुर तक में मरी हुई मछलियां पाई गई थीं। मरी हुई मछलियों में 44 प्रजाति की मछलियां थी। सबसे अधिक साइप्रिनिडा वर्ग की 41 प्रतिशत और सिबिडा 9 प्रतिशत मछलियां थीं। परीक्षण में पाया गया कि गारा नदी के

जल प्राचलों जैसे चालकता, कुल घुलित ठोस तत्व, क्षारीयता, क्लोराइड आदि निर्धारित स्तर से कहीं अधिक थे और इसका जल गंगा नदी में प्रवाहित होने के कारण मछलियों की मृत्यु हुई।

अप्रैल 2018 के दौरान गंगा नदी प्रणाली के इलाहाबाद खंड से भारतीय मेजर कार्प का कुल अनुमानित मत्स्य प्रग्रहण 0.783 टन पाया गया। इसमें सिर्रिहिनुस मृगला का योगदान उच्चतम तत्पश्चात *लैबियो कल्बासु*, *लैबियो रोहिता* और *कतला कतला* पाया गया।

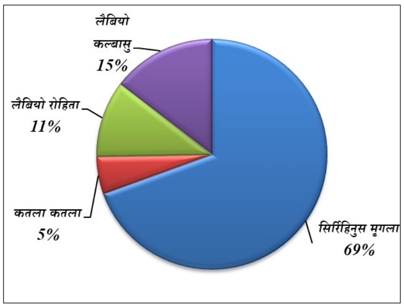

अप्रैल 2018 से मई 2018 महीने के दौरान गंगा नदी के ऊपरी हिस्से और मध्य हिस्से के बीच ग्रीष्मकालीन मत्स्य नमूना हरसिल, टेहरी, हरिद्वार, बिजनौर, नरोरा, फररुखाबाद, कानपुर, इलाहाबाद और वाराणसी में एकत्रित कर अध्ययन किया गया। अध्ययन अवधि के दौरान 10 वर्ग के 25 परिवार से 66 वंश की कुल 95 प्रजातियां, दर्ज किए गई। सबसे ज्यादा 86 प्रजातियाँ बिजनौर मछली लैंडिंग सेंटर से उससे बाद नारोरा (71), इलाहाबाद (67), फररुखाबाद (63), कानपुर (59), वाराणसी (57), हरिद्वार (13), टेहरी (6) और हरसिल में एक प्रजाति दर्ज की गई।

संस्थान के वैज्ञानिकों की एक टीम ने 3 अप्रैल, 2018 को उत्तर प्रदेश के फतेपुर जिले में गंगा नदी में मछलियों की सामुहिक मृत्यु के कारणों की जांच करने के लिए जिले का दौरा किया। मालवा ब्लॉक, के आदमपुर घाट के किनारे नदी के लगभग 6 किमी भाग का सर्वेक्षण किया गया और 25 से अधिक मछुआरों और ग्राम प्रधान सहित स्थानीय लोगों से बातचीत की गई। छोटे आकार की प्रजातियों सहित 6 किलोग्राम तक की बड़ी मछलियों की सामुहिक मृत्यु दर सबसे ज्यादा देखी गयी। मछुआरों ने बताया कि 20 से 25 किलो तक

की मछलियों की भी मृत्यु हो गई। प्रारंभिक सर्वेक्षण में मछुआरों से यह भी पता चला कि मछली मृत्यु 31 मार्च 2018 मध्यरात्रि से शुरू हुई थी। मछुआरों का मानना था कि आदापुर घाट के अपस्ट्रीम (कानपुर) से प्रभावित औद्योगिक प्रभाव ही व्यापक मृत्यु दर का कारण हो सकता। सर्वेक्षण दल ने जल के नमूने एवं जल गुणवत्ता मानकों को एकत्रित किया। मत्स्य उच्च मृत्यु दर का कारण अल्प अवधि के दौरान गंगा नदी में कानपुर चर्म उद्योग के प्रदूषण प्रवाह सहित इलाके की अन्य औद्योगिक इकाइयां का प्रदूषण के साथ जल का बढ़ा हुआ जैविक भार हो सकता है।

विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग, झारखंड के परास्नातक छात्रों का प्रशिक्षण कार्यक्रम

विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड के प्राणीशास्त्र (मत्स्य और मत्स्यपालन) में परास्नातक कर रहे चौथे सेमेस्टर के छात्रों के लिए 10 दिनों

का प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर में किया गया। जिसका उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ बसन्त कुमार दास ने किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 24 छात्रों ने भाग लिया। एक प्रशिक्षण सत्र में छात्रों का स्वागत करते हुए निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन का महत्व ग्रामीण भारत के लोगो का जीवन और आजीविका को सुनिश्चित करने के लिए मत्स्य प्रबंधन पर जोर दिया। डॉ. बिमल प्रसन्ना मोहंती, प्रभागाध्यछ, मत्स्य संसाधन और पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग, ने छात्रों से नियमित आधार पर भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में आयोजित किए जाने वाले भविष्य के प्रशिक्षण में ज्ञान उन्नयन के लिए मछली के पौष्टिक पहलुओं, आणविक जीनोमिक्स पर उन्नत प्रशिक्षण में आने का आग्रह किया। प्रशिक्षण मॉड्यूल में क्षेत्रीय एक्सपोजर मुआयना, फील्ड प्रदर्शन और संस्थान

के वैज्ञानिकों के साथ इन-हाउस क्लास इंटरैक्शन शामिल था जिसमें तलछट और जल रसायन शास्त्र, जैविक जीवों, विभिन्न मछली प्रजातियों की पहचान, जीआईएस मैपिंग, सजावटी मछली पालन के विभिन्न पहलुओं, मछली रोगों पर व्यावहारिक प्रयोगशाला इत्यादि थे।

पीकेआर मेमोरियल (पीजी) कॉलेज, धनबाद, झारखंड के परास्नातक छात्रों का प्रशिक्षण कार्यक्रम

पीकेआर मेमोरियल (पीजी) कॉलेज, धनबाद, झारखंड के प्राणीशास्त्र (मत्स्य

और मत्स्यपालन) में परास्नातक कर रहे चौथे सेमेस्टर के छात्रों के लिए 10 दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर में किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ बसन्त कुमार दास ने किया। डॉ. बी. पी. मोहंती, प्रभागाध्यक्ष, मत्स्य पालन संसाधन और पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग ने छात्रों से संस्थान द्वारा नियमित आधार पर आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने का आग्रह किया। प्रशिक्षण के दौरान छात्रों को तलछट और जल रसायन शास्त्र, जैविक जीवों, विभिन्न मछली प्रजातियों की पहचान, सजावटी मछली पालन के बिभिन्न पहलुओं, मछली रोगों का व्यावहारिक ज्ञान, तैरने वाले गोलीनुमा मत्स्य आहार बनाने की निर्माण सामग्री एवं विधि, सुदूर संवेदी विधि द्वारा जलीय सम्पदा मानचित्रीकरण आदि शामिल किया गया। इंटरैक्टिव सत्रों में अंतर्देशीय खुली पानी मत्स्यपालन और स्थानीय मछुआरों द्वारा सामना की जाने वाली विभिन्न समस्याओं के वर्तमान पहलुओं को शामिल किया गया। छात्रों ने 23 मई, 2018 को संस्थान में विश्व जैव विविधता दिवस-2018 के आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाई। छात्रों को पश्चिम बंगाल के सुंदरबन डेल्टा से भी अवगत कराया गया और ज्वार्नाध्मुख प्रणाली के पारिस्थितिकीय नमूने एकत्र करवाए गये।

'उन्नत विश्लेषणात्मक उपकरण - गैस क्रोमैटोग्राफी मास स्पेक्ट्रोमेट्री' का प्रथम राष्ट्रीय प्रशिक्षण

मत्स्य संसाधन और पर्यावरण प्रबंधन विभाग द्वारा आयोजित 'उन्नत विश्लेषणात्मक उपकरण - गैस क्रोमैटोग्राफी मास स्पेक्ट्रोमेट्री' के पहले

राष्ट्रीय प्रशिक्षण का उद्घाटन डा. बसन्त कुमार दास, निदेशक भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के मुख्यालय बैरकपुर में किया। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में क्रोमैटोग्राफी और जी.सी.-एम.एस. का परिचय; लिपिड निष्कर्षण और ऍफ़. ए. एम् .ई. की तैयारी; जी.सी.-एम.एस. द्वारा फैटी एसिड विश्लेषण; हेड स्पेस जी.सी.-एम.एस. द्वारा अस्थिर विश्लेषण और जी.सी. द्वारा कीटनाशक अवशेष विश्लेषण आदि शामिल किये गये। इस प्रशिक्षण में ओडिशा कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर और विद्यासागर विश्वविद्यालय, मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल के शोध विद्यार्थी और पोस्ट- डॉक्स के साथ-साथ संस्थान के वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारी कुल नौ प्रतिभागियों ने भाग लिया। शुरुआत में, डॉ बी.पी. मोहंती, कोर्स समन्वयक और प्रभागाध्यक्ष, मत्स्य पालन संसाधन और पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और पांच दिनों के प्रशिक्षण के कार्यक्रम का एक संक्षिप्त अवलोकन दिया। उन्होंने इस पाठ्यक्रम के लिए प्रतिभागियों की दिलचस्पी के लिए और सम्बन्धित संस्थानों के प्रमुखों की उम्मीदवारों को प्रायोजित करने के लिए सराहना की। क्रमशः नदीय पारिस्थितिकी और मात्स्यिकी प्रभाग जलाशय और आद्रभूमि और वेटलैंड मात्स्यिकी प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष डॉ. वी. वी. सुरेश और डॉ. उत्तम कुमार सरकार ने अपनी टिप्पणियों में इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपयोगिता पर बल दिया और उन्नत उपकरण के ऐसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण आयोजित करने के प्रयासों की भी सराहना की। डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, ने अपने संबोधन में, क्रोमैटोग्राफिक तकनीकों की मूल बातें और क्रोमैटोग्राफी विज्ञान के कालक्रम विकास को जानने की आवश्यकता पर जोर दिया, जो शोधकर्ताओं को विश्लेषणों में नवीनतम और उचित उपकरण और तकनीकों को मछली के स्वास्थ्य और

अंतर्स्थलीय जलीय पर्यावरण से संबंधित शोध में लागू करने में मदद करेगा। उन्होंने प्रतिभागियों से इस अवसर का उनके संस्थानों के लाभ के लिए भरपूर उपयोग करने का भी आग्रह किया। अंत में उद्घाटन कार्यक्रम की समाप्ति डॉ. एस.के. नाग, प्रिंसिपल वैज्ञानिक, एफआरईएम डिवीजन और प्रशिक्षण कार्यक्रम के सह-समन्वयक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

विश्व जैव विविधता दिवस

संयुक्त राष्ट्र ने 22 मई को जैव विविधता से संबंधित मुद्दों के बारे में जागरूकता

बढ़ाने बढ़ाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय जैविक विविधता दिवस(आईडीबी) के रूप में घोषित किया है। संस्थान ने इस अवसर पर २३ मई को एक समारोह का आयोजन किया। डॉ. जोस टी. मैथ्यू, आई.एफ.एस, पी.सी.सी.एफ., अनुसंधान, निगरानी और विकास, पश्चिम बंगाल सरकार ने मुख्य अतिथि के रूप में एवं डॉ अरुण पडियार, प्रोजेक्ट मैनेजर, ओडिशा वर्ल्ड फिश प्रोजेक्ट,मत्स्यपालन निदेशालय विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुये। समारोह का शुभाराम्भ डा. बसन्त कुमार

दास, निदेशक के स्वागत भाषण के साथ हुआ। निदेशक महोदय ने जैव विविधता महत्ता के बारे में बताते हुए विभिन्न नदियों की मत्स्य प्रजाति विविधिता के बारे में बताया। मुख्य अतिथि डॉ. जोंस टी. मैथ्यू, ने सुंदरबन में पाए जाने वाले विभिन्न पादप, पुष्प और जीव जंतु के बारे में बताया। उन्होंने सुंदरबन की जैव विविधता के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि ये हम वैज्ञानिको का फर्ज है कि हम अपने देश कि जैव विविधता को बचाये रखे। कार्यक्रम के अंत में डॉ. अर्चन कान्ति दास ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया और सभा की समाप्ति राष्ट्रगान के साथ हुई।

स्वच्छ भारत पखवाड़ा 2018

संस्थान ने स्वच्छ भारत पखवाड़ा–2018 का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास द्वारा सामूहिक रूप से 'स्वच्छता शपथ' लेकर किया गया। श्री

राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने स्वच्छ भारत की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला और मानव संसाधन विकास मंत्रालय से स्वच्छ भारत इंटर्नशिप योजना की खूबियों के बारे में सभा का अवगत कराया किया। स्वच्छ भारत पखवाड़ा आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. वी. आर. सुरेश ने अगले 15 दिनों तक चलने वाले कार्यक्रमों के बारे में सभा को अवगत कराया, और सभी कर्मचारियों से अनुरोध किया की वे सभी कार्यक्रमो में दिल से भाग ले| तदोपरांत परिसर के मुख्य कार्यालय भवन के गलियारे और लॉबी की सफाई की गयी।

स्थानीय समुदायों के मध्य स्वच्छता के प्रति संवेदनशीलता और स्वच्छता संदेश को प्रसारित करने के लिए मोनिरामपुर क्षेत्र में एक "स्वच्छता रैली" का

आयोजन संस्थानके कर्मचारियों द्वारा किया गया।

दिनांक 18 मई, 2018 को प्रशासनिक भवन के कमरे, प्रवेश कक्ष, गलियारे, और और परिसर की सफाई की गयी| दिनांक 19 मई, 2018 को स्वछता संदेश को जन मानस में फ़ैलाने और स्वछता के प्रति जागरूकता लाने के लिए, संस्थान के कर्मचारियों और वैज्ञानिको ने सामूहिक रूप से बैरकपुर कोर्ट और सार्वजनिक बस स्टैंड की सफाई में भाग लिया। दिनांक 21 मई, 2018 को संस्थान परिसर के आवासीय क्षेत्रों की सफाई की गयी। दिनांक 24 मई,

2018 को मेरे गांव मेरा गौरव (एमजीएमजी) में उत्तर 24 परगना स्थित बारासत ब्लॉक के चयनित गांवों कथुरिया और रुद्रपुर में स्वच्छ भारत मिशन की महत्ता समझाने के लिए एक जागरूकता

कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास के मार्गदर्शन में बारासत ब्लॉक के मोरपुल प्राइमरी स्कूल में दो गांवों की महिलाओं समेत 50 से अधिक ग्रामीणों ने स्वछता संवेदीकरण कार्यक्रम में भाग

लिया। संस्थानके वैज्ञानिको ने स्वच्छ भारत मिशन के बारे में अपने विचार साझा किये हैं और वे ग्रामीणों को दैनिक जीवन में स्वच्छता के महत्व के बारे में जानकारी दी। वैज्ञानिकों और किसानों के बीच “दिन-प्रतिदिन जीवन में प्लास्टिक का उपयोग करने के हानिकारक प्रभाव” विषय पर एक चर्चा की गई थी। उस चर्चा के बाद संस्थान के कर्मचारियों ने कथुरिया गांव के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की परिधि को साफ करने के लिए ग्रामीणों के साथ एक स्वच्छता अभियान किया और ग्रामीणों के बीच ब्लीचिंग पाउडर वितरित किया गया।

दिनांक 26 मई, 2018 को गंगा नदी के तट पर स्थानीय समुदायों को संवेदनशील और जागरूक करने के, संस्थान कर्मचारियों की एक टीम ने हुगली नदी पर नाव के द्वारा एक अभियान किया और उन्हे गैर-जैव-अवयव वस्तुओं के नदी में निपटान से जलीय वनस्पति और जीवों पर दुष्प्रभाव, प्लास्टिक डंपिंग के कुप्रभाव इससे नदी के जैव विविधता के ह्रास के बारे में अवगत कराया।

दिनांक 29 मई, 2018, बच्चे जो कि भविष्य पीढ़ी की कुंजी है के बीच स्वच्छता संदेश प्रसारित करने के लिए, "स्वच्छ भारत अभियान" पर दो प्रतिस्पर्धा निबंध और चित्रकला का आयोजन किया गया।

इस दौरान संस्थान ने तीन प्रकार के केचुऐ *यूड्रिलस यूजेनिया, एसेनिया फेरिडा* और *पेरीओनिक्स एक्वावेटास* के मिश्रण का उपयोग करके दैनिक बची हुई चीज (बगीचे अपशिष्ट, पत्ता कूड़े, रसोई अपशिष्ट, खरपतवार बायोमास इत्यादि) से जैविक खाद का उत्पादन करने के लिए एक नई पहल की जिसके अन्तर्गत दो कंपोस्टिंग इकाई स्थापित की गई।

स्वच्छ भारत पखवाड़ा–2018 का समापन पहले से तैयार ग्रीन कंपोस्ट पिट में केचुऐ के संरोपण के साथ शुरू हुआ, इसके बाद संस्थान कर्मचारियों के बीच तुलसी के पौधे का वितरण हुआ। समापन कार्यक्रम डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक की अध्यक्षता में, सभी प्रभागो के , प्रभागाध्यक्ष, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एवं वरिष्ठ वित्त और खाता अधिकारी के स्वागत के साथ हुआ। डॉ सोमा दास सरकार, वैज्ञानिक ने स्वच्छ भारत पखवाड़ा, 2018 की गतिविधियों पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, वरिष्ठ वित्त और लेख अधिकारी और प्रभागाध्यक्ष ने अपने भाषण में विशेष रूप से समाज को संवेदनशील बनाने के लिए संस्थान द्वारा उठाए गए कदमों पर ध्यान केंद्रित किया इसके साथ साथ 'ग्रीन पिट की स्थापना' की नई पहल की भी सराहना की। संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास, ने परिसर में और परिसर के बाहर स्वच्छ भारत क्रियाकलापों और एम.जी.एम.जी. में अपनाए गये गांवों में किये गये कार्यकलापो की सराहना की और स्वच्छ भारत पखवाड़ा आयोजन समिति के प्रयास की सराहना की। उन्होंने संस्थानके कर्मचारियों से अधिक संख्या में कंपोस्टिंग इकाई की स्थापना को बढ़ावा देने के लिए आग्रह किया ताकि ये जैविक खाद संस्थान के बागीचे की शुश्रूषा में लागू हो सके और संस्थान निधि में राजस्व उत्पादन में योगदान दे सके। निदेशक ने निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता के प्रतिभागियों के बीच पुरस्कार भी वितरित किया है। सुश्री सेफली विश्वास, सदस्य सचिव, स्वच्छ भारत समिति ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम राष्ट्रीय गान के साथ समाप्त हुआ।

इसी प्रकार से संस्थान के सभी केंद्रो पर स्वच्छ भारत पखवाड़ा–2018 मनाया गया. संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद के स्टाफ सदस्यों ने

स्वच्छता पखवाड़ा 2018 के दौरान स्वच्छता से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु के स्टाफ सदस्यों ने पखवाड़ा के दौरान केंद्र की सभी प्रयोगशालओ, कमरों एवं बगीचों की सफाई की संस्थान के कर्मचारियों द्वारा की गई। 24 मई, 2018 को कृष्णगिरी गांव मछुआरो के बीच में सफाई और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया

गया। 30 मई, 2018 को ग्रामीणों के बीच स्वच्छ भारत मिशन के बारे में समझ बनाने के लिए स्वच्छ भारत पखवाड़ा को येलपनापालय (मेरा गाँव मेरा

गौरव गांव) में मनाया गया। इसी दिन थिपागोंडानाहल्ली में चमराजजगर, सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय (जीएचपीएस) में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्कूल के छात्रों को कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया गया था और छात्रों के बीच भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। कचरे के सुरक्षित निपटान के

लिए क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु के कार्यालय परिसर में कंपोस्ट पिट बनाया गया।

कोलकाता, कोच्ची एवं वड़ोडरा अनुसंधान केंद्र पर सभी प्रयोगशालओ, कमरों और परिसर की सफाई कर्मचारियों द्वारा की गयी।

बैठकें

दिनांक 26-27 अप्रैल, 2018 को राष्ट्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी एवं जलकृषि योजना के निर्माण हेतु भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई के साथ एक बैठक का आयोजन किया।

दिनांक 30 अप्रैल, 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने "पिंजरे में मछली पालन" पर ओडिशा के गंजम जिले में एक कार्यशाला का आयोजन किया।

दिनांक 2 मई, 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने राष्ट्रिय मात्स्यिकी विकास बोर्ड के साथ मात्स्यिकी क्षेत्र में कौशल निर्माण विषय पर एक विचार मंथन सभा में भाग लिया। इसका आयोजन भाकृअनु परिषद् और पशुपालन, डेयरी एवं मात्स्यिकी विभाग के तत्वाधान में किया गया था।

दिनांक 2 मई, 2018 संस्थान के वैज्ञानिको ने को डी.बी.टी.-सेन्टर फार सेलुलर एण्ड मालेक्युलर प्लेटफार्म (सी-सीएऍमपी) द्वारा आयोजित बैठक में प्रस्तावित परियोजना पर प्रस्तुति दी।

दिनांक 4 मई, 2018 संस्थान के वैज्ञानिको ने को असम मात्स्यिकी विकास निगम के तकनीकी विशेषज्ञों के साथ बैठक की।

दिनांक 5 मई, 2018 संस्थान के वैज्ञानिको ने को असम मात्स्यिकी विकास निगम के साथ बील मात्स्यिकी पर प्रायोजित परियोजना पर बैठक की।

दिनांक 11 मई, 2018 को संस्थान ने भाकृअनुप के अनुसंधान परिसर, उमियाम में आयोजित भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति-II (पूर्वोत्तर क्षेत्र) की मध्यावधि पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।

दिनांक 14 मई, 2018 को संस्थान ने भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति-II की आगामी बैठक (22-23 जून 2018) के प्रबंध हेतु भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठाजल जीव पालन संस्थान, भुवनेश्वर में आयोजित बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 21मई, 2018 को ए.आर.आई.ए.एस सोसायटी, असम सरकार द्वारा आयोजित बैठक में भाग लिया। इस बैठक का उद्देश्य संस्थान द्वारा प्रस्तुत परामर्शी परियोजना के तकनीकी पहलुओं पर विचार-विमर्श करना था।

संस्थान ने दिनांक 21 मई, 2018 को निदेशक, मात्स्यिकी विभाग, तमिलनाडु सरकार के साथ बैठक में भाग लिया। इस बैठक का उद्देश्य जलाशयों में वैज्ञानिक प्रबंधन तकनीकों द्वारा मत्स्य उत्पादन की वृद्धि करना है।

संस्थान ने दिनांक 18-19 मई, 2018 को अरूणाचल प्रदेश में आयोजित सभा, "पर्सपेक्टिव प्लानिंग फॉर रिसर्जेंट एग्रीकल्चर एंड अलाइड सेक्टर इन अरुणाचल" में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 22 मई 2018 को गंगा नदी एवं वर्ष 2025 में इसकी जैवविविधता: मत्स्य आवास तथा प्रजाति संरक्षण पर दिशा - निर्देश " विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया। इस कार्यशाला का आयोजन वर्ल्डवाइड फण्ड फॉर नेचर-इंडिया, नई दिल्ली द्वारा किया गया था।

संस्थान ने दिनांक 22 मई 2018 को नई दिल्ली में "ई -फ्लो अंडर आई. ई. डब्लू . पी. प्रिओरिटी एरिया 2" पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय बैठकें

संस्थान ने दिनांक 28 अप्रैल 2018 को विश्व बैंक की टीम के साथ जल संसाधन विभाग, भुवनेश्वर में बैठक में भाग लिया।

दिनांक 3 मई, 2018 के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और वर्ल्डफिश सेंटर के बीच कृषि भवन, नई दिल्ली में वर्ष 2018-19 के लिये कार्य योजना के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

बिहार के शेखपुरा जिले 30 मछूआरों/मत्स्य पालको के लिये "अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन एवं विकास" के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिनांक 11-17 मई 2018 तक आयोजित किया गया।

अन्य महत्वपूर्ण बैठकें

जनजाति उपयोजना के अंतर्गत संस्थान ने ओडिशा के गंजम जिले में दिनांक 30 अप्रैल 2018 को जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें 100 मछुआरें और मत्स्य पालक सम्मिलित हुये।

दिनांक 16 से 20 मई 2018 के दौरान बिहार के चार मनों, मझरिया, कररिया, सिरसा तथा रूलही में मानसून पूर्व सर्वेक्षण किया गया। दिनांक 13 से 19 मई 2018 के दौरान बिहार के दो जलाशयों में मानसून पूर्व सर्वेक्षण किया गया। इसका उद्देश्य मछलियों की उत्पादकता तथा पिंजरे में मछली पालन आदि पहलुओं पर विचार करना है।

दिनांक 23 मई 2018 को संस्थान ने डा. अरूण पाधियार, प्रबंधक, वर्ल्डफिश, क्षेत्रीय इकाई, ओडिशा के साथ बैठक किया जिसका उद्देश्य अनुसंधान परियोजना हेतु सहयोगात्मक तौर कार्य करना है।

सेवानिवृत्ति

इस माह संस्थान से श्री कार्तिक सी. मलाकर कुशल सहायक कर्मचारी संस्थान के मुख्यालय से सेवानिवृत्त हुए।

सम्पादक मंडल की तरफ से

बड़े हर्ष के साथ इस अंक को आप सभी पाठको के लिए प्रस्तुत कर रहे है। हमारा हमेशा ही यह उद्देश्य रहता है कि आप सभी को इस पत्रिका के द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में नयी नयी जानकारियाँ समय पर मिलती रहे।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक, संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम एवं सुनीता प्रसाद, फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2008 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत दूरभाष: 91-33-25921190/91 फैक्स: 913325920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समचर में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है